सोनीपत के बुटाना गांव की लड़की से पुलिसिया रेप में नेताओं और मीडिया के लिए हाथरस जैसा रस क्यों नहीं ?

सोनपीत (म.मो.) मेरी 17 साल की बेटी के गुप्तांगों में पुलिस ने कांच की बोतल और डंडा डाल दिया, जेल के अन्दर की औरतों ने बताया कि तेरी बेटी की हालत ठीक नहीं है, उसके साथ पुलिस ने बहुत गलत किया है। ये कहना है रेप पीड़िता और दो पुलिस वालों के कत्ल की आरोपी नाबालिग लड़की की माँ का।

एक तरफ हाथरस में जहाँ मीडिया का पूरा जमावड़ा है और सवर्ण-दलित राजनीति भी उफान पर है वहीं भाजपा शोषित हरियाणा के सोनीपत जिले के थाना क्षेत्र बरौदा, ग्राम बुटाना की एक दलित लड़की के बलात्कार पर मीडिया के साथ-साथ सभी राजनीतिक दलों को भी सांप सूंघ गया है। ऐसा तब है जब थाने के पुलिसकर्मी से लेकर सीआईए वालों ने लगातार चार दिन नाबालिग लड़की से बलात्कार किया और उसके गुप्तांग में लाठी तक डाल दी (जैसा की लड़की की माँ ने बताया)।

क्या है कहानी

बीते 30 जून को जींद गोहाना रोड पर हरियाणा पुलिस के दो सिपाहियों की चाकू मार कर की गई हत्या के पीछे पुलिस की थ्योरी जहाँ पेशेवर अपराधियों के नाम लिखी गई वहीं घटनाक्रम इस पूरी थ्योरी पर सवाल खड़ें करता है। इन सवालों के घेरे में मुख्यमंत्री खट्टर, गृहमंत्री अनिल विज प्रशासन, न्यापालिका, डाक्टर, मीडिया और पूरा समाज शामिल है।

30 जून को जींद निवासी, सुनार जाती का अमित अपनी प्रेमिका रीना (बदला हुआ नाम) जो दलित जाती से सम्बंधित है से मिलने चार दोस्तों के साथ बुटाना गाँव के बाहर जींद-गोहाना रोड पर रात 11 बजे के करीब गया। दोनों की आपसी नजदीकियां जींद शहर में रहने के दौरान बढ़ीं थी। कोरोना के कारण रीना का परिवार जींद से भुटाना वापस आ गया जिसके चलते अमित को भी समाज की नजर बचा कर रीना से मिलना पड़ा। समाज से बचने में भी जोखिम उतना ही है जितना कि समाज से न बच पाने का। गश्त पर निकले दो सिपाहियों कप्तान सिंह और रविन्द्र ने इतनी रात रीना और अमित को जब सड़क पर पकड़ा तो पहले उनकी जाति पूछी और फिर अमित से लड़की उनके हवाले करने की जिद की। अमित ने उन्हें बताया कि वो दोनों शादी करना चाहते हैं और पुलिस बेशक पैसे ले ले पर उन्हें जाने दे। पर दोनों सिपाहियों ने रीना को जबरन खींचना शुरू कर दिया और अमित पर भी डंडे बरसाए। अमित ने चाकू से दोनों पर वार कर उनका कत्ल कर दिया।

इन सबके बीच अमित के तीन दोस्त और रीना के साथ गई उसकी बहन मीना (बदला हुआ नाम) सड़क से दूर खड़े रहे।

सीआईए ने कुछ ही दिनों में अमित के दोस्त संदीप को उसकी गाड़ी नम्बर से पकड़ लिया और फिर अमित तक भी पहुँच गई जिसे बाद में पुलिस ने मुठभेड़ में मारा गया दिखा दिया। जबकि सूत्रों से पता चला कि अमित को तो पुलिस ने पहले उसके जींद के घर से उठाया और एक दिन मार-पीट करने के बाद उसकी हत्या कर दी जबकि संदीप के पैर में गोली मारी गई।

इसके बाद पुलिस ने रीना के मामा और भाई को उठा लिया जिसके चलते दबाव में रीना की माँ ने 2 जुलाई 2020 को खुद अपनी बेटी रीना को गोहाना स्थित सीआईए पुलिस के सामने पेश किया। रीना की चचेरी बहन मीना को भी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया लिया और 18 जुलाई तक दोनों लड़कियों से किसी को मिलने नहीं दिया। 18 जुलाई को करनाल जेल में जब रीना की माँ की मुलाकात अपनी बेटी से हुई तो उसने बताया कि 12 पुलिस वालों ने चार दिनों तक रीना का बलात्कार किया जिससे उठे बहुत ब्लीडिंग हो रही है। उसके गुप्तांग में लाठी और कांच की टूटी बोतल डाली और एक पुलिस वाले ने अपना हाथ तक डाल दिया। इस वहशीपने की शिकार रीना ने जेल में आने वाले चिकित्सकों से सब बातें बतायीं पर उन्होंने भी इसपर कोई रिपोर्ट नहीं की।

मीडिया की टुच्ची रिपोर्टिंग

लगभग सभी बड़े अखबारों ने इतनी बड़ी घटना पर पुलिस की गढ़ी कहानी को सच बना कर छाप दिया। टाइम्स आफ इंडिया ने 7 जून को छापी अपनी खबर में एक भी क्रॉस इन्वेस्टीगेशन का एंगल नहीं डाला और जैसा आका ने दिया वैसा छाप दिया। जबकि घटना के बीतने और खबर के छपने में 7 दिन का वक्त मिला। जो मीडिया हाथरस में खेत की पगडण्डी और बाजरे के खेतों से छुपता हुआ पीड़िता के घर एक्सक्लूसिव पहुंचना चाहता है वो मीडिया दिल्ली से सटे सोनीपत के इस मामले पर ऊंघ रहा है।

यूट्यूब चैनल जनज्वार को दिए अपने बाईट में डीएसपी डाक्टर रविंदर ने पीड़िता की माँ के साथ-साथ रेप पीड़िता का नाम भी सरेआम जाहिर कर दिया। इसपर भी अखबारों ने आजतक कोई आवाज नहीं उठाई।

एक महीने बाद आरोपी पुलिस पर आधी अधूरी एफआईआर

रीना की माँ और उनके साथ जुड़े कुछ समाज सेवियों की मदद और भाग दौड़ करने से राज्य महिला आयोग कार्रवाई करने को मजबूर हुआ और बीच में आने से लड़की की माँ की तरफ से पुलिस ने तीन पुलिस कर्मियों पर एफआईआर दर्ज कर दी। कमाल की बात है कि एफआईआर दर्ज करने के बाद भी न तो उसके बारे में पीड़िता की माँ को सूचित किया गया और न ही उसे कई दिनों तक ऑनलाइन अपडेट किया गया। इतना ही नहीं तीनो आरोपी पुलिस वाले आजतक खुले घूम रहे हैं। यानी कि पुलिस ने एफआईआर मात्र दिखावे के लिए कर ली।

एफआईआर को पढ़ने के बाद साफतौर पर देखा जा सकता है कि पुलिस ने अपने मामले में कितनी गड़बड़ी की है। सबसे पहले यह कि 30 जून को और फिर उसके बाद घटी घटना की एफआईआर 30 जुलाई को देरी से करने का कारण बताने वाला कॉलम पुलिस ने भरा ही नहीं। यानी कि एफआईआर में देरी क्यों हुई इस पर पुलिस ने कोई जवाब नहीं दिया। लड़की की 23 अगस्त 2002 की जन्मतिथि के मुताबिक घटना होने की तारीख तक जब लड़की नाबालिग थी और खुद पुलिस ने भी पोक्सो एक्ट की धारा लगाई हुई है तो सभी 12 आरोपी पुलिस वालों, बुढाना थाना और सीआईए टीम को आरोपी क्यों नहीं बनाया गया? सिर्फ तीन पुलिस वालों संदीप, राधे, संजय का ही नाम क्यों आया बाकी के 9 पुलिस वालों के नाम क्यों छिपाए गए? जिन तीन अभियुक्तों का नाम आया है उनका पद व पता दोनों ही एफआईआर में दर्ज नहीं हैं।

क्यों गायब हैं राजनीतिक दल?

पीड़िता की माँ ने बताया कि अपनी बेटी को न्याय दिलाने और पुलिसिया जानवरों से बचाने की गुहार लेकर वह लोकल एमपी संजय भाटिया के पास भी याचना पत्र लेकर गयीं। पत्र लेने क बाद आजतक संजय भाटिया ने दोबारा कभी मिलने और न्याय के लिए आवाज उठाने की जहमत नहीं की।

इसी तरह वह इलाके के छोटे बड़े कई और नेताओं से मिल चुकी हैं पर कोई भी साथ देने को राजी नहीं। जो गृह मंत्री अनिल विज गब्बर सिंह बने पूरे प्रदेश में छापे मारते फिरते हैं और जरा सी बात पर निलंबित करने का नाटक खेलते हैं उन्हें इस दलित लड़की पर उनके ही विभाग के भेड़ियों की यह हरकत परेशान क्यों नहीं कर रही?

दरअसल यह सारा खेल है चुनाव का है। रिपोर्ट के शुरुआत में हाथरस का जिक्र किया गया था क्योंकि वहाँ ठाकुर जाति राजनीतिक रूप से सशक्त है और सूबे में उनका मुख्यमंत्री होने के नाते माथे पर हल्दी का लेप पोते स्थानीय गुंडे पीड़िता के परिवार को धमका रहे हैं। कुछ ऐसा ही बुटाने के इस गाँव में भी है। बरौदा विधानसभा सीट पर 3 नवम्बर को उपचुनाव होना है। क्योंकि यह सीट जाट बाहुल्य सीट है और इस गाँव और आस-पास के जाट यदि किसी पार्टी से नाक पिचका लेंगे तो उस पार्टी की हार पक्की हो जाएगी।

बरौदा सीट भूपेन्द्र सिंह हुड्डा की भी नाक का सवाल है इसलिए राहुल गाँधी और प्रियंका गाँधी वहां फिलहाल पैदलमार्च नहीं करना चाहते। भीम आर्मी के मूंछों पर ताव देते चंद्रशेखर रावण को भी अपना दल-बल रीना को न्याय दिलाने के लिए लेकर जाने की फुरसत नहीं मिली है। मुख्यमंत्री खट्टर और गृह मंत्री अनिल विज से ऐसी कोई उम्मीद करना भी बेवकूफी की सीमाओं को पार करने जैसा होगा। गाँव से भागने पर मजबूर पीड़ित परिवार ने बताया कि पुलिस और गाँव के लोगों के डर से फिलहाल वे गाँव छोड़कर बाहर रहने को मजबूर हैं। आरोप लगाते हुए कहा कि, कोर्ट में मांग की थी कि उनकी बेटी का मेडिकल चेकअप एम्स से करवाया जाए पर जज ने कहीं से भी करवाने की छूट दे दी और स्थानीय पुलिस ने गोहाना में ही अपने रसूख का फायदा उठा कर मेडिकल रिपोर्ट को मैनेज कर लिया। कथित तौर पर कुछ सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भी आरोप लगाये कि जिन दो पुलिस वालों की हत्या अमित ने की वे जाट समुदाय से थे, जिस जज ने पीड़िता की जमानत याचिका खारिज करके उसे जेल भेजा वे भी जाट और जिन तीन पुलिस वालों को नामजद किया गया है वह भी जाट हैं। इस तरह मामला जाट और दलित के होने की सूरत में सभी राजनीतिक दल जाट वोट को पक्का रखना चाहते हैं और इसीलिए चुप्पी साधे बैठे हैं।

हो सकता है कि पुलिस की ही कहानी सही हो जिसकी संभावना.1 प्रतिशत ही दिखाई देती है। पर इस मामले में समाज से लेकर लोकतंत्र के नाम पर बना फर्जी तंत्र पूरी तरह से नंगा हो रहा है और अपने इस नंगेपन को खुलेआम प्रदर्शित करने पर उसे जरा भी शर्म हया नहीं। अमित और रीना का मिलना ही समाज ने ऐसा घृणित कार्य मान रखा है कि उसके बाद रेप से बचाने का ठेका उठाये खुद पुलिस भी चार दिन तक ऐसी लड़की का रेप करे तो समाज को फर्क नहीं पड़ता। उल्टे समाज तालियाँ पीट कर पुलिस को शाबाशी देता है। जिस राज्य में कन्या भ्रूण हत्या का ग्राफ इतना विशाल हो उससे और क्या उम्मीद की जा सकती है। पीड़िता की माँ सरकार से क्या मांग रही है? सिर्फ एक निष्पक्ष जांच क्या इतने बड़े-बड़े वादे करने वाली सरकारें डरकर एक जांच भी नहीं करा सकती।

छात्र एकता मंच का धरना

छात्र एकता मंच ने शुक्रवार दलित लड़कियों से पुलिसकर्मियों द्वारा किये गए गैंगरेप और यौनिक हिंसा के खिलाफ विरोध प्रदर्शन व जिला सचिवालय के आगे धरना दिया।

डीसी ऑफिस के सामने नारेबाजी करने के बाद तहसीलदार को अपनी जायज मांगों का ज्ञापन सौंपा। छात्र एकता मंच हरियाणा के प्रदेश अध्यक्ष अंकित ने अपनी बात रखते हुए कहा कि लगातार महिलाओं के साथ रेप हो रहे हैं। हर रोज 100 से ज्यादा महिलाओं के साथ शारीरिक उत्पीड़न किया जाता है। फांसी रेप की सजा कोई समाधान नहीं है।

प्रेम, खाप, बलात्कार, पुलिस मुठभेड़ और उपचुनाव

यूपी के हाथरस से भी कहीं निकृष्ट कांड गोहाना, जिला सोनीपत (हरियाणा) में हुआ है। दलित लड़की को बलात पुलिसकर्मियों के चंगुल में जाने से रोकने वाले सुनार युवक को जान देनी पड़ी और उस लड़की को, उसकी माँ द्वारा राज्य महिला आयोग की मार्फ़त दर्ज करायी एफ़आईआर के अनुसार, कई दिन तक दर्जन भर पुलिसवालों ने बलात्कार का शिकार बनाया। लेकिन जहां हाथरस जाने को लालायित नेताओं और मीडिया का ताँता लगा हुआ है, गोहाना का प्रकरण उठाने से सभी कतरा रहे हैं।

बरोदा थाना में दर्ज पुलिस की एफ़आईआर के अनुसार, 30 जून की रात गोहाना-जींद मार्ग पर गाँव बुटाना के क्षेत्र में, गश्त पर निकले दो पुलिसकर्मी हत्या का शिकार हो गए थे। उनके शरीर पर चाकुओं के घाव थे। पुलिस ने 2 जुलाई को इस घटना के मुख्य आरोपी को जींद में मुठभेड़ दिखाकर मार गिराया। जबकि कहा जा रहा है कि वह 1 दिन पहले से ही पुलिस हिरासत में था।

फिलहाल मृतक आरोपी की मित्र लड़की का परिवार और महिला एक्टिविस्ट सोनीपत में धरने पर हैं। उनके अनुसार, मुख्य आरोपी जींद से गाँव बुटाना निवासी अपनी मित्र से मिलने आया था जब दोनों पुलिसकर्मी अचानक वहां धमक गए और उन्होंने उसे लठिया-धमका कर लड़की को अपनी हवस का शिकार बनाना चाहा। इस दौरान मुख्य आरोपी द्वारा लड़की को बचाने के क्रम में पुलिसकर्मी मारे गए। घटना के समय लड़की की उम्र 18 वर्ष से दो माह कम थी यानी वह कानूनन नाबालिग थी।

पुलिस के दबाव में माँ ने लड़की और उसकी चचेरी बहन को, जो भी घटना के समय कुछ दूर मृत आरोपी के तीन दोस्तों के साथ मौजूद थी, 2 जुलाई को पुलिस के हवाले कर दिया। उसके बाद 15 जुलाई कोर्ट में पेशी तक माँ को बेटी से नहीं मिलने दिया गया। 18 को मिलते ही लड़की ने माँ को दोनों बहनों से हुए बलात्कार व अन्य अमानुषिक टॉर्चर बारे बताया। उसके बाद काफी धक्के खाने के बाद उनकी एफ़आईआर 30 जुलाई को दर्ज हो पायी। आगे न खास जाँच हुयी है, न गिरफ़्तारी।

दोनों मामलों में इस ज़मीन-आसमान जैसे फर्क की वजह? जहां हाथरस में जातीय ध्रुवीकरण गहरा करना सभी राजनीतिक दलों को रास आ रहा है, गोहाना में जातीय समीकरण ने उनके मुँह सिले हुए हैं। यहाँ के जाट बहुल बरोदा विधान सभा क्षेत्र का उपचुनाव 3 नवंबर को होने जा रहा है। सीधा मुक़ाबला सीएम खट्टर की भाजपा और नेता विपक्ष हुड्डा की कांग्रेस में है। उप-मुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला की प्रतिष्ठा भी दांव पर है कि वे कितने जाट वोट भाजपा को दिला पाते हैं।

न केवल स्थानीय जाट भावनाएँ प्रेम को लेकर हिंसक सड़े-गले खाप मूल्यों से जुड़ी हैं, मारे गए दोनों पुलिसकर्मी भी जाट समुदाय से हैं। यानी मुठभेड़ के नाम पर मृत लड़के और पुलिस हिरासत में बलात्कार की शिकार लड़कियों में उनकी दिलचस्पी नहीं रह गयी। दलित आवाज़ें कमजोर हैं। मीडिया की बोलने की आज़ादी पर बेशक सर्वोच्च न्यायालय तक बहस चलती रहेगी; फिलहाल राजनीति को तो यहाँ चुप रह कर ही वोट बटोरने हैं।

खबर मरम्मत

जुम्मन मियां पंक्चर वाले

पोप ने पूंजीवाद को नकारा

इसाईयों के सबसे बड़े धार्मिक नेता और धर्मगुरू पोप ने पूंजीवाद को नाकाम घोषित किया है। कोविड महामारी के बाद के विश्व पर 'सभी भाई हैं' नाम से जारी अपने दृष्टि पत्र में पोप फ्रांसिस ने कहा है कि कोविड महामारी ने यह साबित कर दिया है कि 'बाजार पूंजीवाद' के चमत्कारिक सिद्धांत नाकाम हो गये हैं। उन्होंने कहा कि विश्व को एक नये तरह की राजनीति की जरूरत है जो वार्ता एवं एकजुटता को बढावा दे तथा हर कीमत पर युद्ध को खारिज करे।

बड़े आश्चर्य की बात है कि जब पूंजीवादी को कम्युनिज्म के खात्मे की घोषणा कर रहे थे और उन्हीं के खेमे के सिपहसालार पोप ने पूंजीवाद को ही निकम्मा घोषित करके एक तरह से उसके खात्मे का आह्वान कर दिया। फ़िर भी पोप में शायद कुछ ईमानदारी या इन्सानियत बची है जो ऐसा कह गये, हिन्दू और मुस्लिम धर्मगुरूओं को तो अपने चेलों को जाहिलपने में धकेलने से अब भी फुर्सत नहीं है।

एक और नोबेल पुरस्कार वाले ने मोदी को लताड़ा

नोबेल पुरस्कार प्राप्त विश्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्री जोसेफ़ स्टिग्लिट्ज ने मोदी को कोविड से निपटने में असफलता, अर्थव्यवस्था के सत्यानाश और धर्म के आधार पर लोगों को लड़ाने की राजनीति करने के लिये लताड़ा है। वो मंगलवार को फ़िक्की के पश्चिम बंगाल काउंसिल के एक वेबीनार में बोल रहे थे। उन्होंने अचानक और बिना योजना के मोदी द्वारा लागू किये गये लॉकडाउन की आलोचना की और कहा कि महामारी से सही तरीके से निपटे बिना अर्थवयवस्था को भी नहीं सुधारा जा सकता। उन्होंने स्पष्ट कहा कि मोदी बांटने की राजनीति कर रहे हैं ओर हिन्दू मुसलमान को आपस में लड़ा कर देश में वैमनस्य का माहौल पैदा कर रहे हैं, इससे देश की अर्थव्यवस्था में सुधार नहीं हो सकता। उन्होंने ये भी कहा कि कोविड महामारी से निपटने और अर्थव्यवस्था में सुधार के लिये मोदी को देश के धनाढ़्यों-अरबपतियों पर टैक्स लगाना चाहिए और गरीब वर्ग को आर्थिक राहत देनी चाहिए। ताकि सरकार की आय भी बढे और गरीब लोगों के खर्च करने से देश भी आर्थिक रफ्तार पकड़े।

जोसेफ़ साहब को याद दिला दें कि उनसे पहले ही देश के 15-20 नौजवान आईआरएस अफ़सरों ने अपनी एसोसिएशन के माध्यम से सरकार को एक प्रसताव अमीरों पर टैक्स का दिया था। सरकार ने तुरन्त उन अफ़सरों को कारण बताओ नोटिस थमा दिया था। और खुद उनका भाषण करवा रही संस्था फिक्की क्यों चुप बैठी है। वह जोसेफ़ साहब के ये सुझाव सरकार को क्यों नहीं भेजती। मोदी जी को पता है जब तक मुस्लिम घृणा से लबरेज करके लोगों को मूर्ख बनाये रखा जा सकता है तो वो अपने दोस्तों अडाणी-अम्बानी व अन्य को क्यों तंग करें। उन पर क्यों टैक्स लगायें। मोदी जी तो 'हाई वर्क' में विश्वास रखते हैं हावर्ड या नोबेल में नहीं। ऐसे नोबेल प्राइज वाले कितने ही भौंकते रहो मोदी जी की बला से।

बबीता फ़ोगाट ने फ़िर चोला बदला

हरियाणा की बबीता फोगाट पहलवान ने एक बार फ़िर चोला बदल लिया है। पहले वह लड़-झगड़ और अंत में चापलूसी करके हरियाणा पुलिस में डीएसपी लगी थी। फ़िर सत्ता और पैसे की भूखी बबीता नौकरी छोड़कर चुनाव में कूद पड़ी और 2019 में भाजपा के टिकट पर इसने चरखी दादरी से एमएलए का चुनाव लड़ा। वहां लोगों ने इसको धूल चटा दी तो ये भभकती घूमती रही। इसी दौर में ये एक मार्किट कमेटी के कर्मचारी को पीटने के कारण सुर्खियों में आयी। वो मुकदमा अभी इन पर चल रहा है। अभी दो महीने पहले ये फ़िर खट्टर के आगे हाथ-पांव जोड़कर खेल विभाग में डिप्टी डायरेक्टर लगी थी। लेकिन अभी उन्होंने इस पद से भी इस्तीफ़ा दे दिया है।

बबीता जैसी घमंडी और बड़बोली शायद ही भाजपा को रास आती है। जो अपने बयानों से घृणा फ़ैलाती रहती हैं। बबीता अपने व्यक्तित्व के कारण भाजपा को खूब रास आती है। भविष्य में वो भाजपा की राजनीति में जरूर ऊपर उठेगी लेकिन हरियाणा के लोगों में उनकी इज्जत कम ही होगी।

आखिरी मिसरा-

वो पास से गुजरते हैं तो दिल अब भी बहकता है।
पहले 'डियो' की खूशबू आती थी
अब सेनिटाइजर महकता है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06